प्रथम सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका)

हरि ॐ बच्चों !! भारत भूमि वीरों की कर्म भूमि है एक से बढ़कर एक योद्धाओं ने इस पवित्र माटी में जन्म लिया जिन्होंने विदेशी आक्रमणकारियों को चुनौती दी । वीर बालकों की इसी कड़ी में आज हम आपको आज की कहानी में बताएंगे बालक रणजीतसिंह के बारे में । फिर स्वास्थ्य सुरक्षा में हम जानेंगे कि बारिश के दिनों में क्या कंरना चाहिए स्वास्थ्य सुरक्षा, गतिविधि में हम सीखेंगे संस्कृत । इसके अलावा योगासन ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञानं प्रतियोगिता, कीर्तन, खेल, प्राणायाम, और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे पावन सत्संग ।

तो आइए, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते हैं आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

कीर्तन- अब हम कीर्तन करते हुए अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर नृत्य करेंगे ।

https://youtu.be/7yMWmhcJXR

बच्चों, अब हम मंत्रोच्चारण और स्तुति करेंगे। सभी बच्चे अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे ।

ॐ गं गणपतये नमः, ॐ श्री सरस्वत्यै नमः,

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

शिखा स्पर्श : सभी बच्चे शिखा के स्थान पर हाथ लगाकर मंत्र उच्चारण करेंगे -

ॐ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ।
यद् भद्रं तन्न आ सुव ॥ ॐ

(हे विश्व के देव ! हमारे सम्पूर्ण दुर्गुणों को दूर करें, और ब्रह्माण्ड में जो भी कल्याणकारक, शुभ गुण, कर्म, स्वभाव, सुख हैं वो हमें प्राप्त हों ।)

अब सभी बच्चे करेंगे “ॐकार” गुंजन

https://youtu.be/IpaxAhv-9LM

(2 मिनिट)

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे। त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI (1 मिनिट चलायें ।)

3. आओ सुनें कहानी

पंजाब केसरी रणजीत सिंह

पंजाब केसरी रणजीत सिंह के बचपन की यह बात है। उनके पिता महासिंह के पास एक जौहरी जवाहरात लेकर आया। राजा, रानी और राजकौर जवाहरात देखने बैठे। जौहरी उत्साहपूर्वक एक के बाद एक चीज दिखाता। इतने में बाल कुमार का आगमन हुआ।

लाडले कुमार ने कहाः “पिता जी ! मेरे लिए भी हीरे की एक अंगूठी बनवाओ न ! मेरी इस उँगली पर वह शोभायमान होगी। ”

पिता का प्रेम उमड़ पड़ा। रणजीत सिंह को आलिंगन देते हुए वे बोलेः "मेरा पुत्र ऐसे साधारण हीरे क्यों पहने ? ये हीरे तो साधारण हैं।"

राजकौर ने पूछाः "तो फिर आपका इकलौता बेटा कैसे हीरे पहनेगा?"

महासिंह ने कोई दृढ़ स्वर से कहाः "कोहीनूर।"

राजकौर ने पूछाः "कोहीनूर अब कहाँ है पता है ?"

महासिंहः "हाँ। अभी वह कोहीनूर अफगानिस्तान के एक अमीर के पास है। मेरा लाल तो वही हीरा पहनेगा। क्यों बेटा पहनेगा न ?"

रणजीत सिंह ने सिर हिलाकर कहाः "जी पिता जी ! ऐसे साधारण हीरे कौन पहने ? मैं तो कोहीनूर ही पहनूँगा।"

……और आखिर रणजीत सिंह कोहीनूर पहन कर ही रहे।

पिता ने यदि इस बालक के चित्त में संत होने के या परमात्मप्राप्ति करने के उच्च संस्कार डाले होते तो वह महत्वाकांक्षी और पुरुषार्थी बालक मात्र पंजाब का स्वामी ही नहीं बल्कि लोगों के हृदय का स्वामी बना होता। लोगों के हृदय का स्वामी तो बने या नहीं बने लेकिन अपने हृदय का स्वामी तो बनता ही। ….. और अपने हृदय का स्वामी बनने जैसा, अपने मन का स्वामी बनने जैसा बड़ा कार्य जगत में और कोई नहीं है। क्योंकि यही मन हमें नाच नचाता है, इधर उधर भटकाता

है। अतः उठो जागो। अपने मन के स्वामी बन कर आत्मतत्त्वरूपी कोहीनूर धारण करने की महत्त्वाकांक्षा के साथ कूद पड़ों संसार-सागर को पार करने के लिए।

4. भजन / पाठ

आज हम एक भक्ति पूर्ण भजन गायेंगे -

कदम अपने आगे बढाता चला जा ... !!

https://youtu.be/1hesGY4xPWE

5. ज्ञान का चुटकुला

पिता बेटे की मार्कशीट देखकर बोले - दो थप्पड़ लगाने चाहिए, कितने कम नंबर आए हैं !

बेटा - हां पिताजी चलो, मैं उस मास्टरजी का घर भी जानता हूं जिसने इतने कम नंबर दिए हैं !

सीख : नित्य प्रति समय से पढ़ाई करोगे तो ही अच्छे नंबर आएंगे ।

6. संस्कृति सुवास :-

वेदव्यासजी

वेदव्यासजी महाराज वसिष्ठजी के पौत्र और पाराशर ऋषि के पुत्र थे। व्यासजी का जन्म एक द्‌वीप में हुआ थे इसलिए उनका नाम 'द्‌वैपायन' पड़ा । उनका शरीर कृष्ण (काले) वर्ण का थे इसलिए उन्हें कृष्णद्‌वैपायन भी कहा जाने लगा। जन्म के कुछ समय बाद ही वे माँ से आज्ञा लेकर बद्रिकाश्रम में तप करने चले गए। वे एकान्त में समाधि लगाकर रहते और बेर खाकर जीवन यापन करते। इस कारण उनका एक नाम महर्षि बादरायण भी पड़ गया। उन्होंने वेदों का विस्तार किया, इसलिए उनका नाम 'वेदव्यास जी' पड़ा।

वेदव्यास ने वेदों के विभाग किये, 'ब्रह्मसूत्र' , 'महाभारत' और ' श्रीमद भागवतपुराण' जेसे महान भक्ति ग्रंथो की रचना की। अन्य 17 पुराणों की रचना भी भगवान वेदव्यासजी ने ही की है। व्यासजी ने पूरी मानव जाति को सच्चे

कल्याण का खुला रास्ता बता दिया है। आज भी जिन जिनके अन्तःकरण ब्रहम ज्ञान उभरता है, ऐसे ज्ञानी पुरुष जहाँ पर बेठ कर सत्संग करते है अथवा कथा वाचक भागवत की कथा करते है, वह ऊँचा आसन व्यासपीठ कहलाता है। व्यासजी के शास्त्र-श्रवण के बिना विश्व में कोई आध्यात्मिक उपदेशक बन ही नहीं सकता, ऐसा व्यासजी का अगाध ज्ञान है।

भगवान वेदव्यास के नाम से ही आषाढ़ शुक्ल पूर्णिमा का नाम 'व्यासपूर्णिमा' पड़ा है। यह पर्व गुरुपूर्णिमा भी कहलाता है ।

7. स्वास्थ्य सुरक्षा

बारिश के दिनों में स्वास्थ्य सुरक्षा

बच्चों वर्षा ऋतु में पानी से संबंधित बीमारियां बहुत अधिक होती है। बारिश के दिनों में धरती पर सूर्य की किरणें कम पड़ती हैं इसलिए जठराग्नि मंद पड़ जाती है और वायु (गैस) की तकलीफ ज्यादा होती है। यदि हमने सावधानी

और ध्यान नहीं रखा तो गंभीर बीमारियां शरीर को पकड़ लेती है।

इस ऋतु में त्वचा के रोग, मलेरिया, टायफाइड अधिक होते हैं । अतः खाने-पीने की सभी वस्तुओं को मक्खियां एवं कीटाणुओं से बचायें व उन्हें साफ करके ही प्रयोग में लें । बाजारू दही व लस्सी का सेवन न करें ।

8. साखी :-

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े, काके लागूं पांय ।
बलिहारी गुरु आपने, गोबिन्द दियो बताय ॥

अर्थ: गुरु और भगवान (गोविंद) दोनों एक साथ खड़े हों, तो पहले किसके चरण स्पर्श करने चाहिए? गुरु ने ही हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाया है, इसलिए गुरु का स्थान भगवान से भी ऊँचा है।

9. गतिविधि

आओ, सीखे संस्कृत...

आज हम जानेंगे कि संस्कृत में अव्यय (Indeclinable Words) के साथ वाक्य कैसे बनाते हैं ।अव्यय वे शब्द होते हैं जो लिंग, वचन, कारक या काल के बदलने पर भी कभी नहीं बदलते (यानी अपरिवर्तनीय रहते हैं)। जैसे - यहाँ, वहाँ, कहाँ, जब, कब, तब, हमेशा आदि । ये संस्कृत के स्थान अव्यय शब्द हैं जिनका रूप कभी नहीं बदलता है ।

अधुना- अब

अब पढ़ने का समय है । - अधुना पठनस्य समय: अस्ति ।

इदानीम् - इस समय

इस समय वर्षा ऋतु चल रही है । - इदानीं वर्षा ऋतु: प्रचलति ।

च - और

श्री राम और श्री कृष्ण साक्षात ईश्वर हैं । - श्रीराम: श्रीकृष्णश्च साक्षात् ईश्वर : ।

अपि - भी

भगवान भी गुरु की सेवा करते हैं ।- ईश्वर: अपि गुरो: सुश्रुषां करोति ।

एव - ही (निश्चय ही)

सदगुरु ही संसार बंधन से मुक्त करते हैं । - सदगुरु: एव भवबंधनात् विमुच्यते ।

न - नहीं

उद्‌यम से रहित मनुष्य सिद्धि को नहीं पाता । - पुरुषार्थहीन: मानव: सिद्धिम् न लभते ।

10. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की । आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है । प्रश्न है,-

“निम्नलिखित में से कौन-सा योगासन भोजन के बाद भी किया जा सकता है? ” विकल्प है -

A) सर्वांगासन

B) वज्रासन

C) पवनमुक्तासन

D) पादपश्चिमोत्तानासन

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

11. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम सभी श्री आशारामायणजी की पंक्तियां दोहराएंगे । https://youtu.be/bl57Gh3T4ps (कुछ पंक्तियों का पाठ करवाएं।)

12. सत्संग श्रवण

अब हम पूज्य बापूजी के श्रीमुख से सत्संग में सुनेंगे-

भाग्य के भरोसे मत बैठो (सफलता का असली राज)

https://youtu.be/Hew3jEkPuh0

13. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- रणजीतसिंह को कौनसा हीरा पहनना था ?

- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?
- वर्षा ऋतु में बीमारियां बहुत अधिक क्यों होती है?
- वर्षा ऋतु में पानी कैसे पीना चाहिए?
- वर्षा ऋतु में क्या खाना चाहिए और क्या नहीं खाना चाहिए?
- संस्कृत में अव्यय क्या होते है? उदाहरन दें.
- आज के सत्संग से आपको क्या सीख मिलती है?

14. पूर्णाहूति

आरती - सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

नारायण नारायण नारायण नारायण।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो एक नए ज्ञान वर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ!!!

दीपज्योति एवं आरती -

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

प्रतियोगिता का उत्तर - ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है - [b] वज्रासन भोजन के बाद भी किया जा सकता है, इसे करने से पाचन क्रिया अच्छी होती है ।

****

दूसरा सप्ताह

१. सत्र की शुरुआत (पूर्वभूमिका) :-

हरि ॐ बच्चों, इस माह की 29 जुलाई को गुरुपूनम है, इसको व्यासपूर्णिमा भी बोलते हैं।

आज की कहानी में जानेंगे दादागुरुजी के प्रति पूज्य बापूजी की अदभूद कर्तव्य परायणता । फिर संस्कृति सुवास में हम जानेंगे कि व्यास पूर्णिमा का क्या महत्व है और भगवान वेदव्यास जी ने मानव जाति के कल्याण के लिए क्या किया? फिर गतिविधि में हम सभी बच्चे पूरे भाव से अपने पूज्य गुरुदेव का मानस पूजन करेंगे। इसके अलावा ज्ञान का चुटकुला, ज्ञान विज्ञानं प्रतियोगिता, कीर्तन, खेल, प्राणायाम, और अंत मे पूज्य बापूजी के श्री मुख से सुनेंगे पावन सत्संग.

तो आइये, पूज्य गुरुदेव का स्मरण करते हुए शुरू करते है आज का बाल संस्कार केंद्र -

२. प्राणायाम, जप, ध्यान

अब सभी बच्चे अपने स्थान पर खड़े होकर थोड़ी देर पंजों के बल उछलकूद करेंगे, जिससे शरीर और मस्तिस्क में रक्त का अनुकूल प्रवाह बढ़ेगा और चुस्ती फुर्ती मे मदद मिलेगी ।

बच्चों, अब सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर बेठ जाएंगे, कमर सीधी, ज्ञान मुद्रा में 'हरि ॐ' का गुंजन करेंगे।

अब सभी अनामिका उँगली से तिलक के स्थान पर स्पर्श करते हुए मंत्र बोलेंगे और हाथ जोड़कर पूज्य सद्गुरुदेव की प्रार्थना करेंगे -

https://youtu.be/7yMWmhcJXRI

ॐ गं गणपतये नमः,

ॐ श्री सरस्वत्यै नमः

ॐ श्री गुरूभ्यो नमः

बच्चों, अब हम सब त्राटक करेंगे । त्राटक से हमारी एकाग्रता और याद शक्ति बढ़ती है ।

https://youtu.be/XxWfEjHbqCI

3) आओ सुनें कहानी :-

आज्ञा सम नहीं साहिब सेवा...!!

एक बार नैनीताल में गुरुदेव (स्वामी श्री लीलाशाहजी महाराज) के पास कुछ लोग आये । वे ‘चाइना पीक’ (हिमालय पर्वत का एक प्रसिद्ध शिखर देखना चाहते थे । गुरुदेव ने मुझसे (पूज्य बापूजी को) कहाः “ये लोग चाइना पीक

देखना चाहते हैं । सुबह तुम जरा इनके साथ जाकर दिखा के आना ।

“मैंने कभी चाइना पीक देखा नहीं था, परंतु गुरुजी ने कहाः “दिखा के आओ ।” तो बात पूरी हो गयी ।

सुबह अँधेरे-अँधेरे में मैं उन लोगों को ले गया । हम जरा दो-तीन किलोमीटर पहाड़ियों पर चले और देखा कि वहाँ मौसम खराब है ।

जो लोग पहले देखने गये थे वे भी लौटकर आ रहे थे । जिनको मैं दिखाने ले गया था वे बोले : “मौसम खराब है, अब आगे नहीं जाना है ।”

मैंने कहा : “भक्तो ! कैसे नहीं जाना है, बापूजी ने मुझे आज्ञा दी है कि ‘भक्तों को चाइना पीक दिखाके आओ’ तो मैं आपको उसे देखे बिना कैसे जाने दूँ ?”

वे बोले : “हमको नहीं देखना है। मौसम खराब है, ओले पड़ने की संभावना है ।”

मैंने कहा : “सब ठीक हो जायेगा ।” लेकिन थोड़ा चलने के बाद वे फिर हतोत्साहित हो गये और वापस जाने की बात करने लगे । ‘यदि कुहरा पड़ जाय या ओले पड़ जायें तो....’ ऐसा कहकर

आनाकानी करने लगे। ऐसा अनेकों बार हुआ। मैं उनको समझाते-बुझाते आखिर गन्तव्य स्थान पर ले गया । हम वहाँ पहुँचे तो मौसम साफ हो गया और उन्होंने चाइनाप देखा । वे बड़ी खुशी से लौट और आकर गुरुजी को प्रणाम किया ।

गुरुजी बोलेः "चाइना पीक देख लिया ?"

वे बोले : "साँई ! हम देखने वाले नहीं थे, मौसम खराब हो गया था परंतु आसाराम हमें उत्साहित करते-करते ले गये और वहाँ पहुँचे तो मौसम साफ हो गया ।"

उन्होंने सारी बातें विस्तार से कह सुनायीं । गुरुजी बोलेः "जो गुरु की आज्ञा दृढ़ता से मानता है, प्रकृति उसके अनुकूल जो जाती है ।" मुझे कितना बड़ा आशीर्वाद मिल गया ! उन्होंने तो चाइना पीक देखा लेकिन मुझे जो मिला वह मैं ही जानता हूँ । आज्ञा सम नहीं साहिब सेवा । मैंने गुरुजी की बात काटी नहीं, टाली नहीं, बहाना नहीं बनाया, हालाँकि वे तो मना ही कर रहे थे । बड़ी कठिन चढ़ाईवाला व घुमावदार रास्ता है चाइना पीक का और कब बारिश आ जाये, कब आदमी को ठंडी हवाओं का, आँधी-तूफानों का मुकाबला करना पड़े, कोई पता नहीं । किंतु कई बार मौत का मुकाबला करते आये हैं तो यह क्या होता है ? कई बार तो मरके भी आये, फिर इस बार गुरु की आज्ञा का पालन करते-करते मर भी जायेंगे तो अमर हो जायेंगे, घाटा क्या पड़ता है ?

सभी बच्चे जोर से बोलेंगे श्री सदगुरुदेव भगवान की जय....

4. ज्ञान का चुटकुला :

संजू बैंक में पैसे जमा करवाने गया...!

कैशियर- आपके सारे नोट नकली हैं...

संजू - तुम्हें क्या फर्क पड़ता है जमा तो मेरे अकाउंट में ही होने हैं ना...!

सीख : कहीं पर भी बिना सोचे समझे कोई बात नहीं करनी चाहिए ।

5. श्लोक :-

जिन महापुरुषों ने जीवन पर्यंत कठोर परिश्रम करके हमारे उद्धार के लिए इतना सब कुछ किया, ऐसे भगवान् वेदव्यासजी की हम सभी हाथ जोड़कर स्तुति करेंगे -

नमोऽस्तुते व्यास विशालबुद्धे,

फुल्लारविन्दा यत पत्रनेत्र।

येन त्वया भारततैलपूर्णः,

प्रज्ज्वालितो ज्ञानमय प्रदीपः।।

व्यासाय विष्णुरूपाय, व्यासरूपाय विष्णवे।

नमो वै ब्रह्मनिधये, वासिष्ठाय नमो नमः।।

हे विशाल बुद्धि और खिले हुए कमल की पंखुड़ियों के समान नेत्र वाले भगवान् वेदव्यासजी, आपको मेरा नमस्कार है। जिन्होंने ज्ञान के दीप से पुरे भारत को प्रज्वलित किया है, जो स्वयं विष्णु स्वरूप, तथा विष्णु ही व्यास है ऐसे वसिष्ठ-मुनि के वंशज को हम बारम्बार नमस्कार करते हैं।

6. क्विज़

अब बारी है ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता की ।

आपको एक प्रश्न पूछा जाएगा, उत्तर में चार विकल्प होंगे और आपको 10 सेकंड में सही उत्तर बताना है ।

प्रश्न है,- " निम्नलिखित में से वेदव्यास जी के शिष्य कौन थे ? " विकल्प है -

A) राजा जनमेजय

B) ऋषि मार्कण्डेय

C) ऋषि वैशम्पायन

D) द्रोणाचार्य

प्रश्न का सही उत्तर आपको सत्र के अंत में बताया जायेगा ।

7. संस्कृति सुवास :-

गुरु पूर्णिमा और वेदव्यासजी

- बच्चों, व्यासपूर्णिमा मन्वंतर का प्रथम दिन है, महाभारत का सम्पन्न दिवस और विश्व के प्रथम आर्षग्रंथ ‘ब्रह्मसूत्र’ का आरम्भ दिवस है। ब्राह्मणों के लिए श्रावणी पूर्णिमा, क्षत्रियों के लिए दशहरा, वैश्यों के लिए दीपावली, तथा आम आदमी के लिए होली का त्यौहार है। लेकिन गुरुपूनम का त्यौहार तो सभी मनुष्यों के लिए, देवताओं के लिए, दैत्यों के लिए-सभी के लिए है। देवता लोग भी अपने गुरु बृहस्पति का पूजन करते हैं और दैत्य लोग अपने गुरु शुक्राचार्य जी का पूजन करते हैं और सभी मनुष्यों के लिए

गुरुपूर्णिमा का महत्त्व है। भगवान श्रीकृष्ण भी गुरुपूनम का त्यौहार मनाते हैं, अपने गुरु के पास जाते हैं। कितने भी तीर्थ करो, कितने भी देवी-देवताओं को मानो फिर भी किसी की पूजा रह जाती है लेकिन गुरुपूनम के दिन गुरुदेव की मन से पूजा की तो वर्षभऱ की पूर्णिमाएँ करने का व्रतफल मिलता है और सारे देवताओं व भगवानों की पूजा का फल मिल जाता है।

- जैसे गर्मियों में पृथ्वी सूख जाती है और व्यासपूर्णिमा के समय वृष्टि होती है तो पृथ्वी में नयी चेतना आती है, वृक्षों में नया जीवन आता है, ऐसे ही व्यासपूर्णिमा साधक के जीवन में नयी आध्यात्मिक चेतना, नया प्रकाश, नया आनंद और नया उल्लास लाती है।
- देवताओं ने इस दिन को आशीर्वाद दिये थे कि 'आज के दिन जो साधक अपने सद्‌गुरु की पूजा-उपासना करेगा, उसको वर्ष भर के पर्व मनाने का फल मिलेगा।' भारतवासी तो ठीक लेकिन ऊपर के लोकों में यक्ष,

गंधर्व, किन्नर और जो योगीपुरुष रहते हैं, वे लोग भी इस उत्सव को बड़े उत्साह से मनाते हैं।

- पूज्य बापूजी कहते है – "और पर्व तो तुम मनाते हो लेकिन गुरुपूनम तुम्हें मनाती है, कि भैया! संसार में बहुत भटके, जहाँ गये, धोखा ही खाया, अपने को ही सताया, अब जरा अपने आत्मा में आराम पाओ। "
- जिन्होंने वेदों का विभाग करके मानवजाति का बड़ा कल्याण किया उन महापुरुष (वेदव्यासजी) की स्मृति में, जिनको परमात्मा का साक्षात्कार हुआ ऐसे सद्‌गुरुओं की पूजा का दिवस और गुरु के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करने का पर्व है- 'गुरु पूर्णिमा'

8) भजन :-

अब सभी बच्चे गाएंगे प्यारा सा भजन -

ब्रह्म का रूप गुरु, विष्णु स्वरुप गुरु...

https://youtu.be/ThhN1iVwGuY

9) गतिविधि :-

मानस पूजन

पूज्य बापूजी कहते है – "गुरु-पूर्णिमा को किया हुआ मानस पूजन वर्ष भर के पूजन का पुण्य प्रदान करता है, हजारों मील दूर बैठा हुआ सत्शिष्य सद्‌गुरु की मानस-पूजा करके प्रेरणा-प्रसाद पाने में सक्षम होता है ।

षोडशोपचार की पूजा से भी अधिक फल देने वाली मानस पूजा है । "

नारद जी कहते हैं बाहर से हम हजारों पुष्प चढ़ाएं पर मानस पूजन में चढ़ाया एक पुष्प भी उससे कई गुना श्रेष्ठ होता है। अतः अब हम सभी बच्चे पूरे भाव से अपने पूज्य गुरुदेव का मानस पूजन करेंगे.

ॐ श्री गुरुभ्यो नमः, ॐ श्री परम गुरुभ्यो नमः, ॐ श्री परात्पर गुरुभ्यो नमः, ॐ श्री परमेष्टी गुरुभ्यो नमः

https://youtu.be/wYvS59iX2ac (Play Complete)

सभी हाथ जोड़कर मन ही मन पूज्य गुरुदेव से क्षमा प्रार्थना करेंगे,

ॐ आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर॥
मंत्रहीनं क्रियाहीनं भक्तिहीनं जनार्दन।
यत्पूजितं मया देव! परिपूर्ण तदस्तु मे॥ ॐ

हे गुरुदेव, हम ना आवाहन जानते हैं और ना ही विसर्जन, हमें पूजा विधि भी नहीं आती है, हे गुरुदेव, मंत्रहीन, क्रियाहीन, भक्तिहीन, हमारी इस मानस पूजा को आप स्वीकार करें।

फिर बच्चे अपने ह्रदय क भावों के अनुसार गुरुदेव का मानसिक पूजन करेंगे ।

10. श्री आशारामायण पाठ

बच्चों, अब हम श्री आशारामायण की कुछ पंक्तियां दोहराएंगे ।

https://youtu.be/bl57Gh3T4ps

11. सत्संग श्रवण

अब हम सुनेंगे पूज्य बापूजी की अमृतमयी वाणी ...

इस गुरूपूर्णिमा पर अब तक का सबसे बड़ा उपहार

https://youtu.be/WdFVBr1Kh28

12. प्रश्नोत्तरी

तैयार हो जाइए प्रश्नोत्तरी के लिए -

- आज की कहानी से हमें क्या सीख मिलती है ?
- वेदव्यास जी महाराज ने गुरु पूनम के दिन क्या प्रारंभ किया था?
- देवताओं ने गुरु पूनम के दिन को क्या आशीर्वाद दिया?
- गुरु पूर्णिमा किस का दिवस है?
- मानस पूजा क्यों श्रेष्ठ है?
- व्यासपूर्णिमा का महत्त्व अधिक क्यों है?
- प्रथम भक्ति कौन सी होती ह.
- आज की कहानी से हमें क्या शिक्षा मिलती है
- आज के सत्संग से हमें क्या शिक्षा मिलती है?

13. पूर्णाहूति :-

दीपज्योति एवं आरती

सभी बच्चे अपने अपने स्थान पर आरती के लिए खड़े हो जाएंगे।

प्रार्थना :

ॐ असतो मा सद्गगमय,

तमसो मा ज्योतिर्गमय,

मृत्योर्मामृतं गमय ॥

ॐ शान्ति शान्ति शान्तिः

हे ईश्वर, हमें असत्य से सत्य की ओर ले चलो, अन्धकार से प्रकाश की ओर ले चलो, मृत्यु से अमरता की ओर ले चलो ।

नारायण नारायण नारायण नारायण ।

इसी के साथ हमारा आज का बाल संस्कार केंद्र संपन्न होता है अगले सप्ताह फिर मिलेंगे बच्चो ! एक नए ज्ञानवर्धक विषय के साथ। तब तक के लिए हरि ॐ !!!

ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है । ज्ञान-विज्ञान प्रतियोगिता प्रश्न का सही उत्तर है ।

उत्तर: [C] वैशम्पायन व्यास जी के प्रमुख शिष्य थे, उन्होंने ही व्यास द्वारा लिखित के महाभारत का प्रचार प्रसार किया था.

****